सल्तनतकालीन : कला एवं स्थापत्य

अति॰प्रो॰ डॉ॰ संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी॰एम॰कॉलेज, रहिका, मधुबनी
मो॰ - 8051796740

सल्तनतकालीन स्थापत्य

सल्तनत युग में विभिन्न ललित-कलाओं में से मुख्यतया स्थापत्य-कला का विकास हुआ। इस्लाम चित्रकला का निषेध करता है, इस कारण उसका कोई विशेष विकास संभव नहीं हुआ। गान-विद्या और नृत्यकला भी इस्लाम में वर्जित है परन्तु फिर भी सुल्तानों, अमीरों और प्रान्तीय शासकों के व्यक्तिगत शौक के कारण ये प्रचलित रही। परन्तु इस समय में मुख्य कला स्थापत्य अथवा भवन निर्माण रही। सुविधा की दृष्टि से उस समय की स्थापत्य-कला को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है। प्रथम, दिल्ली अथवा शाही स्थापत्य कला जिसका विकास दिल्ली के सुल्तानों के संरक्षण में हुआ और जिसमें वे सभी इमारतें सम्मिलित की गई हैं जिनका निर्माण सुल्तानों ने विभिन्न स्थानों पर कराया। द्वितीय, प्रान्तीय स्थापत्य कला जिसका विकास प्रान्तीय सुल्तानों अथवा शासकों के संरक्षण में हुआ। प्रान्तीय स्थापत्य कलाओं की अपनी कुछ पृथक व्यवस्थायें थी। तृतीय, हिन्दू स्थापत्य कला जिसका विकास मुख्यतया राजस्थान और विजयनगर राज्यों में हुआ।

परन्तु कला का यह वर्गीकरण केवल सुविधा की दृष्टि से ही किया जा सकता है, वास्तव में इस युग में भारत में एक ऐसी स्थापत्य कला का विकास हुआ जिसे 'भारतीय-इस्लामी' कला अथवा इस्लाम से प्रभावित भारतीय स्थापत्य कला के नाम से पुकारा जा सकता है। शक्ति और सौन्दर्य का जो सामंजस्य भारतीयों ने अपनी स्थापत्य कला में किया था वह अद्वितीय था। ईरानियों ने उसे ग्रहण किया था और तुर्क-अफगानों ने भारत में उसका पुनः प्रयोग किया। तुर्क-अफगान शासक भारत में बस कर यहीं के कलाकारों से अपनी इमारतें बनवायी। विभिन्न हिन्दू इमारतों को नष्ट करके उनके अवशेषों का प्रयोग अपनी इमारतों में किया और खुले आँगनों वाले मन्दिरों को मस्जिदों के लिये उपयुक्त समझकर उनमें साधारण परिवर्तन के पश्चात् उन्हें मस्जिदों में बदल दिया। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार सजावट हिन्दुओं के लिये प्रमुख थी, उसी प्रकार मुसलमानों के लिये भी आवश्यक थी यद्यपि उसका तरीका भिन्न था। हिन्दुओं ने अपनी इमारतों को विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियों से अलंकृत करने का प्रयत्न किया जबकि मुसलमानों ने रेखाओं को समानान्तर, वर्ग, त्रिकोण, आदि में

काट कर अथवा कुरान की आयतों को लिखकर या चमकदार और विभिन्न रंगों के पत्थर का प्रयोग करके अलंकृत करने का प्रयत्न किया। परन्तु दोनों ही वर्गों की अपनी सजावट की भी। उपर्युक्त विभिन्न कारणों से हिन्दू कला ने इस युग की कला को बड़ी मात्रा में प्रभावित किया जिसके फलस्वरूप उस मिश्रित कला का जन्म हुआ जिसे भारतीय-इस्लामी स्थापत्य कला कहा गया।

दिल्ली अथवा शाही स्थापत्य कला

कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में रायपिथौरा के किले के निकट 'कुव्वत-उल-इस्लाम' मस्जिद तथा अजमेर में 'ढ़ाई दिन का झोपड़ा' नामक मस्जिद बनवाया एवं दिल्ली में 'कुतुबमीनार' को बनवाना प्रारम्भ किया था। इसमें कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण एक मन्दिर के स्थान पर तथा अढ़ाई दिन का झोपड़ा एक संस्कृत विश्वविद्यालय के स्थान पर बनवाया गया था। इसलिये इन दोनों इमारतों में हिन्दू-मुस्लिम कला का सामंजस्य दिखता है। कुतुबमीनार के निर्माण का कार्य अवश्य ही कुतुबुद्दीन ऐबक ने किया था किन्तु इसके पूर्णता का कार्य इल्तुतमिश ने किया। इल्तुतमिश के समय यह इमारत २२५ फुट ऊँची तथा चार मंजिला हो गयी, फिर आगे चलकर फिरोजशाह तुगलक ने इसका जीर्णोद्धार करवाते हुए इसे पाँच मंजिला तथा २३५ फीट ऊँचा करवा दिया। इल्तुतमिश ने कुतुबमीनार के अतिरिक्त दिल्ली में ही मलकपुर गाँव के निकट अपने सबसे बड़े पुत्र नासिरुद्दीन महमूद का मकबरा 'सुल्तानगढ़ी' का निर्माण करवाया। इसके अतिरिक्त उसने हौज-ए-शम्सी, शम्सी-ईदगाह, बदायूँ की जामा-मस्जिद और नागौर का अतरकीन दरवाजा बनवाया। बलबन ने रायपिथौरा के निकट अपना स्वयं का मकबरा और लाल-महल बनवाया था। उसका स्वयं का मकबरा जो अब ध्वंसावशेष मात्र है इस्लामी कला का एक श्रेष्ठ नमूना है। अलाउद्दीन खलजी ने सीरी नगर की स्थापना की, हजार स्तम्भों वाले महल का निर्माण करवाया, इसी प्रकार निजामुद्दीन औलिया की दरगाह में जमैयतखाना मस्जिद और कुतुबमीनार के निकट अलाई-दरवाजा का निर्माण करवाया। गियासुद्दीन तुगलक ने कुतुबमीनार के पूरब में 'तुगलकाबाद' नामक एक बसाकर वहाँ अपने महल एवं मकबरा का भी निर्माण करवाया। मुहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली के ही निकट 'जहाँपनाह' नामक एक नवीन नगर की स्थापना की तथा तुगलकाबाद के निकट आदिलाबाद का किला बनवाया। फीरोजशाह तुगलक ने दिल्ली के निकट फीरोजाबाद,

फीरोजशाह कोटला नगर, एक विद्यालय तथा स्वयं का मकबरा निर्मित करवाया। फीरोजशाह के पुत्र खानेजहाँ जूनाशाह ने 'खानेजहाँ-तिलंगानी' का मकबरा, उसके निकट 'काली-मस्जिद', जहाँपनाह में खिरकी मस्जिद का निर्माण करवाया। नासिरुद्दीन महमूद तुगलक शाह के समय में कबीरुद्दीन औलिया के मकबरे के ऊपर लाल गुम्बद का निर्माण करवाया गया। सैय्यद और लोदी शासकों के समय में बनी हुई मुख्य इमारतों में से मुबारकशाह सैय्यद, सैयद मुहम्मदशाह, और सुल्तान लोदी के मकबरे एवं सिकन्दर लोदी के प्रधानमंत्री द्वारा बनवाया गया दिल्ली का 'मोठ की मस्जिद' प्रमुख है।

उपर्युक्त इमारतों में से अधिकांश इमारतें मुख्यतः नगर, किले, और महल नष्ट हो गये हैं परन्तु मकबरे, मस्जिदें तथा मीनारें अब भी मौजूद है।

प्रान्तीय स्थापत्य कला

विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न मुसलमान शासकों ने भी महलों, किलों, मस्जिदों और मकबरों का निर्माण करवाया। परन्तु चूँकि उनके साधन सीमित थे इसलिये वे दिल्ली सुल्तानों की समता में इमारतें नहीं बनवा सके। इसके अतिरिक्त उनकी स्थानीय परिस्थितियों ने भी इमारतों को दिल्ली के सुल्तानों द्वारा बनवाली गई इमारतों से भिन्न स्वरूप प्रदान किया।

<u>मुल्तान</u> — मुल्तान में बनवायी गयी इमारतों में शाह यूसुफ-उल-गर्दिजी, बहाउल-ए-शम्सुद्दीन, और रुक्ने आलम के मकबरे हैं।

<u>बंगाल</u> — बंगाल की इमारतों में अधिकांशतया ईंटों का प्रयोग किया गया था इनमें सुल्तान सिकन्दर सिकन्दरशाह द्वारा बनवायी गयी 'अदीना मस्जिद', गौड़ का 'दरसबारी का मकबरा', पांडुआ का 'एकलाखी-मकबरा', गौड़ की 'लोटन मस्जिद, देवीकोट का रुक्नखाँ का मकबरा, गौड़ की 'सोना मस्जिद', खुलना जिले की 'सात-गुम्बद मस्जिद', नुसरतशाह का बनवाया गया गौड़ का 'कदम रसूल का मकबरा', गौड़ का 'दाखिला दरवाजा', और पांडुआ में बना जलालुद्दीन का मकबरा मुख्य है। खम्भों पर नुकीली महराबों का प्रयोग, हिन्दू प्रतीकों का प्रयोग, और हिन्दू वक्र-रेखाओं को इस्लामी स्वरूप प्रदान करना बंगाल की स्थापत्य कला की मुख्य विशेषतायें रही थी।

<u>जौनपुर</u> — जौनपुर के शर्की शासकों की स्थापत्य कला में हिन्दू तथा इस्लामी स्थापत्य कला शैली का अच्छा समन्वय है। चौकोर स्तम्भ, छोटी दहलीजें, और मीनारों का अभाव इस

कला की मुख्य विशेषतायें रही। जब जौनपुर दिल्ली सल्तनत के अधीन था तब की बनी इमारतों में इब्राहीम नाइक बारबक का महल और किला मुख्य है इसके अतिरिक्त बाद में इब्राहीम शाह शर्की ने 'अटाला मस्जिद' को पूर्ण किया, उसी ने 'झंझरी मस्जिद' को बनवाया, हुसैनशाह ने जामी-मस्जिद को बनवाया एवं एक अन्य इमारत 'लाल-दरवाजा-मस्जिद' का भी निर्माण करवाया।

मालवा — मालवा में बनी हुई आरम्भिक इमारतों में 'कमाल मौला मस्जिद' 'लाट मस्जिद, दिलावर खाँ मस्जिद और मांडू का 'मलिक मुगीस का मकबरा' प्रमुख है परन्तु यहाँ की श्रेष्ठतम इमारतों में मांडु का किला और उसके अन्दर बनी हुई विभिन्न इमारतें हैं। जामा मस्जिद, हिण्डोला महल, अशर्फी महल, सात मंजिल का महमूद खलजी द्वारा बनवाया गया विजय स्तम्भ, महमूद खलजी द्वारा ही बनवाया गया हुसंगशाह का मकबरा, जहाज महल, और बाज बहादुर तथा रानी रूपमती का महल मालवा की श्रेष्ठतम इमारतें हैं। कला की दृष्टि से ये दिल्ली-सुल्तानों द्वारा बनवायी गयी इमारतों के पर्याप्त निकट है।

कश्मीर - कश्मीर में भी हिन्दू और मुसलमान स्थापत्य-कला का समन्वय हुआ। मदनी का मकबरा, श्रीनगर की जामा मस्जिद। और शाह हमदान की मस्जिद इस समय की मुख्य इमारतें हैं।

गुजरात — गुजरात की प्रमुख इमारतों में काम्बे की जामा मस्जिद, ढोलका का हिलाल खाँ काजी का मकबरा, अहमदाबाद की जामा मस्जिद, उसी में बना हुआ अहमदशाह का मकबरा, दरिया खाँ और सैयद आजम के मकबरे, रानी का हुजरा, दरिया खाँ और अलिफ खाँ के मकबरे, ढोलका मस्जिद और शेख अहमद खट्टू का मकबरा शामिल है। अहमदाबाद की जामा मस्जिद को फर्गुसन ने 'पूर्व में बनी मस्जिदों सुन्दरतम मस्जिदों में एक' माना है। इनके अलावा महमूद बेगड़ा ने चम्पानेर के नगर में अनेक इमारतों का निर्माण करवाया।

बहमनी राज्य — दक्षिण भारत के बहमनी राज्य की इमारतों में गुलबर्गा और बीदर की मस्जिदें, मुहम्मद आदिलशाह का मकबरा जो गोल-गुम्बद के नाम से विख्यात है, दौलताबाद की चार मीनार, और बीदर का महमूद गवाँ के इमारत प्रमुख है। इनमें भी हिन्दू-मुस्लिम स्थापत्य कला का समन्वय देखने को मिलता है।

हिन्दू स्थापत्यकला

हिन्दू स्थापत्यकला से संबंधित इमारतें मुख्यतया राजस्थान में प्राप्त होती है जहाँ हिन्दू अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता की रक्षा करने में समर्थ रहे थे। इसके अतिरिक्त विजयनगर में भी विभिन्न इमारतों और महलों का निर्माण हुआ था। परन्तु तालीकोटा के युद्ध के पश्चात् मुसलमान आक्रमण-कारियों ने उस नगर को पूर्णतया नष्ट कर दिया। हिन्दुओं ने अपनी कला को मुस्लिम कला के प्रभाव से मुक्त रखा जिसके कारण उनकी इमारतें मुस्लिम शासकों की इमारतों से भिन्न रहीं। मेवाड़ के राणा कुम्भा ने अनेक किले, महल और मन्दिर बनवाये थे। उनमें से प्रमुख कुम्भलगढ़ का किला और चित्तौड़ का कीर्ति स्तम्भ है। इस स्तम्भ का कुछ भाग लाल पत्थर से तथा कुछ भाग संगमरमर से निर्मित है। चित्तौड़ में ही एक अन्य जैन-स्तम्भ है।

दक्षिण भारत में मन्दिर के बाहर गोपुरम् निर्माण की प्राचीन कला को विजयनगर सम्राटों ने और अधिक विस्तृत रूप प्रदान किया। सम्राट विट्ठलस्वामी का मन्दिर निर्माण विजयनगर शासक राजा कृष्णदेवराय के द्वारा किया गया था। मन्दिरों के प्रांगण के ऊपर मंडप निर्माण का कार्य भी किया गया जैसे – वैलोर के पार्वती मन्दिर पर, काँचीपुरम् के वरदराजस्वामी और एकाम्बरनाथ के मन्दिर पर तथा त्रिचिनापल्ली के जम्बुकेश्वर मन्दिर के ऊपर।

इस युग में मुसलमान शासकों द्वारा बनवायी गयी इमारतों की विशेषता गुम्बद, मीनारें, मेहराब और तहखाने थे। अधिकांश इमारतें मकबरे, मस्जिद, महल तथा किले थी। हिन्दू इमारतों की विशेषता स्तम्भ, जालीदार मेहराबें, और उनकी अलंकारिता थी।